ग्रामोभ्युदयादेव दे ोभ्युदय:
गोविन्द बल्लभ पन्त कृशि एवं प्रौद्योगिक वि वविद्यालय
कृशि मौसम विज्ञान विभाग, कृशि महाविद्यालय
पन्तनगर-२६३१४५ उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बर: ०५९४४-२३३०३२

ग्रामीण कृशि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद - उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे | निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्ष: 25	अंक: 55	बुलेटिन अवधि: 16 – 20 नवम्बर 2016	दिन: मंगलवार	दिनाँक: 15 नवम्बर, 2016

मौसम पूर्वानुमान:

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **उधम सिंह नगर एवं नैनीताल जिलों के मैदानी क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर				
	16–11–2016	17–11–2016	18–11–2016	19–11–2016	20–11–2016
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	28	28	28	28	27
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	09	09	09	08	08
बादल आच्छादन	साफ	साफ	साफ	साफ	साफ
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	85	85	85	85	85
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	45	45	45	45	45
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	04	04	06	06	04
वायु की दिशा	उत्तर–उत्तर–पश्चिम	उत्तर–उत्तर–पश्चिम	उत्तर–उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	पश्चिम

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (8 से 14 नवम्बर, 2016 सुबह 8:30 तक) में आसमान साफ रहा तथा 0.0 मिमी0 वर्षा हुई, अधिकतम तापमान 28.5 से 30.4 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 9.4 से 12.9 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 89 से 92 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 34 से 37 प्रतिशत एवं हवा 1.1 से 3.9 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पूर्व दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्ध:

❖ सिंचित दशा में चने की सामान्य बुवाई नवम्बर के दूसरे पखवाड़े में पूरी कर लें।

❖ चना की उन्नतशील प्रजातियों -पूसा २५६, के०-८५०, अवरोधी, पंत जी-११४, पंत जी-१८६, पंत काबुली चना-१ आदि की बुवाई सिंचित दशा में ४५ से०मी० की दूरी पर बने लाईनों मे ६-८ से०मी० गहराई पर करें। बुवाई से

पूर्व स्वयं उत्पादित बीजों को बीज जनित रोगों से बचाव हेतु सर्वप्रथम १ ग्राम कार्बेडाजिम तथा २ ग्राम थायरम के मिश्रण से ोधित करें। इसके उपरान्त राइजोबियम कल्चर एवं फास्फोरस घोलक कल्चर से भी उपचारित करें। बुवाई हेतु बीज दर छोटे एवं मध्यम आकार के बीज वाली प्रजातियों के ६०-८० कि०ग्रा०/है० तथा मोटे दाने वाली प्रजातियों के लिए बीज दर ८०-१०० कि०ग्रा०/है० रखें। बुवाई से पूर्व खेत में १५-२० कि०ग्रा० नत्रजन, ४०-५० कि०ग्रा० फास्फोरस तथा २०-३० कि०ग्रा० पोटाश /है० प्रयोग करें।

- ❖ गेहूँ की बुवाई के समय औसत तापमान २२° से २३° होना चाहिए। इस क्षेत्र में यह तापमान १५ नवम्बर के आस-पास आता है। समय से पूर्व बुवाई करने पर बालियाँ छोटी होती है।
- ❖ फसलों की बुवाई से पूर्व बीज उपचार अव'य करें।
- ❖ गेहूॅ के बीज का उपचार कार्बोक्सिन 2ग्राम/किग्रा से या टेबूकुनाजोल 1.5 ग्राम/किग्रा बीज की दर से करें।
- ❖ दलहनी फसलों हेतु थीरम 2 ग्राम + कार्बन्डाजीन 1 ग्राम/किग्रा बीज तथा तिलहनी फसलों में मैटालेक्जिल 6 ग्राम/किग्रा बीज की दर से उपचारित करें।
- ❖ पेड़ी गन्ना के रस में ब्रिक्स की मात्रा जाचते रहें। जब ब्रिक्स की मात्रा १८ प्रतिशत हो जाय तब नवम्बर माह में मिल से पर्ची आते ही सर्वप्रथम गन्ने की कटाई कर गन्ना मिल में भेजे तथा खाली हुए खेत की तैयारी कर रबी फसलों की समय से बुवाई करें।
- ❖ रदकालीन गन्ना में बुवाई के २५-३० दिन पर निराई-गुड़ाई करें। आवश्यकतानुसार बुवाई के ३०-४० दिन बाद सिंचाई करें।
- ❖ तोरिया, पीली सरसों एवं राई की फसल में सफेद गेरूई एवं तुलासिता रोग के लक्षण दिखाई दे ंतो मैनकोजेब अथवा रीडोमिल एम० जेड दवा की २.० कि०ग्रा० मात्रा को ८०० लीटर पानी में घोलकर /है० की दर से छिड़काव करें।

उद्यान प्रबन्धः

- ❖ फास्फेटिक एवं पोटेशिक उर्वरक का संस्तुत मात्रा का प्रयोग मुख्य तना से लगभग २ मीटर की दूरी पर गोल नाली में प्रयोग करे।
- ❖ करी कीट का मुख्य रूप से आम में नियंत्रण हेतु वृक्ष के मुख्य तने के पास गुड़ाई करें तथा क्लोरपाइरीफॉस (५ प्रतिशत) का २००-२५० ग्राम बुरकाव करते हुए मिट्टी में मिला दें।
- ❖ उर्वरक डालते समय अगर मृदा में उचित नमी नहीं है तो पहले सिंचाई करें।
- ❖ मुख्य पो क तत्व जैसे फॉस्फोरस और पोटाश के अलावा सूक्ष्म पो क तत्वों का भी प्रयोग करें। इसके लिए पूर्ण रूप से विकसित १० व ि के फल वृक्षों में २५० ग्राम बोरेक्स, जिंक सल्फेट एवं कॉपर सल्फेट का भी प्रयोग करें।
- ❖ लहसुन की फसल में निराई गुड़ाई एवं सिचाई करें।
- ❖ लहसुन में थ्रिप्स एवं पर्पिल ब्लॉच से बचाव हेतु थाईएथेनम ४५ (०.२प्रतिशत) + मैटासिस्टॉक (०.१ प्रतिशत) + सेंडोविट (२-३ग्राम/लीटर) मिलाकर छिड़काव करें।
- ❖ जिन क्षेत्रों में मटर की बुवाई नहीं हुई है वहां बीज की बुवाई करें। तराई क्षेत्र में बुवाई द्वितीय सप्ताह तक अवश्य कर लें जिसके लिए ८०-९० कि०ग्रा० बीज /है० की आवश्यकता होगी। मटर के लिए २५ कि०ग्रा० नत्रजन, ७० कि०ग्रा० फास्फोरस एवं ५० कि०ग्रा० पोटाश की आवश्यकता होती है। जिससे बीज बोने से पहले खेत में भली भाँति मिलाकर बीज की बुवाई कतारों में ३० से०मी० की दूरी पर करें।
- ❖ गोभी वर्गीय फसलों में पत्तियों पर गोल छीलेदार धब्बे दिखाई पड़ने पर मैन्कोजेब २ ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ बैगन में पत्ति धब्बा रेग के प्रबंधन हेतु रोगग्रस्त निचली पत्तियों को खेत से निकाल कर नष्ट कर दे। एवं मैनकोजेब 2 ग्राम/लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ बैगन की फसल में रस चूसने वाले कीड़ो से बचाव हेतु फसल पर फल तोड़ने के बाद मेलाथियान ०.१ प्रतिशत का घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ मटर को तना मक्खी के प्रकोप से बचाने के लिए कार्बोफ्यूरॉन ३ सी०जी०, २५ कि०ग्रा०/है० की दर से बुवाई के समय खाद व बीज के साथ जमीन में डालें।

❖ टमाटर में फल बेधक का प्रकोप होने पर, क्लोरान्ट्रानिलिप्रोले १८.५ एस०सी०, १५०मि०ली०/है० या इन्डोक्साकार्ज १४.५ एस०सी०, ५००मि०ली०/है० की दर से प्रयोग करें।

❖ टमाटर की फसल में सफेद मक्खी का प्रकोप होने पर सायान्ट्रानिलीप्रोले १०.२६ ओ०डी०, ९०० मि०ली०/है० या थियामेथोक्जाम २५ डब्लू०एस०जी०, २०० ग्राम/है० की दर से प्रयोग करें।

पशुपालन प्रबन्धः

❖ इस बदलते मौसम में नवजात पशुओं में निमोनिया की संभावना ज्यादा रहती है। इसलिए पशुओं की आवास व्यवस्था को सुदृढ़ करें व आहार में गर्म चीजें दें।

❖ जिन प'ुओं में एफ0एम0डी0 (मुखपका खुरपका) रोग के टीके नही लगें है उन प'ुओं में तत्काल टीकाकरण करा लें। ताकि आपका पषुधन स्वस्थ रहे और उससे लगातार आपको सही उत्पादन प्राप्त होता रहें।

❖ इस माह में जानवरों में खासकर भैसों में प्रसव दर अधिक बढ़ जाती है इसको ध्यान में रखते हुए पषुषाला को अच्छी तरह साफ–सुथरा, सूखा, रो'ानीदार, हवादार होना चाहिए। इसके लिए नालियों में तथा आस–पास सूखे चूने का छिड़काव करें तथा जानवर के नीचे सूखा चारा बिछा दें। प्रसव के उपरांत स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें। ठंड का समय आ गया है अतः ठंड से बचाव हेतु प'ुपालक इसकी ओर ध्यान दें।

❖ भैंस के 1–4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकैराविटूलूरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते है। इसे पटेरा रोग भी कहते है। समय से उपचार न होने की दषा में लगभग 50 प्रति'त से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान – नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग काली मिट्टी के समान होता है, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरा का होना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान कर सकते है। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औषधी का प्रयोग कर सकते हैं।

❖ पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन प'चात् 10–15सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन प'चात् पुनः 10–15 सी0सी0 नीम का तेल पिला दें। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।

❖ मुर्गियों में फफूँदजनित आहार देने से अपलाटॉक्सीकोि'ास हो जाती है जिसकी वजह से काफी संख्या में उनकी मृत्यु होने की संभावना होती है। ऐसे में मुर्गियों को पषुचिकितसक की सलाह से दवा दें।

❖ पशुओं को हरा चारा में सूखा चारा अवश्य मिलाकर दें। अन्यथा आफरा (टिम्पेती) हो सकती है व पनीले दस्त हो सकते है, जिसकी वजह से उनकी मृत्यु हो सकती है।

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर